ज़मीन में दाना

अल-मसीह के पीछे हो लेने का मतलब

zamīn meṅ dānā. al-masīh ke pīchche ho lene kā matlab

A Grain in the Ground. The Meaning of Following al-Masih

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 23]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from JooJoo41
https://pixabay.com/illustrations/man-stairs-heaven-steps-clouds-5826096/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मसीह की हलीमी अपनाओ	2
मसीह से मिलो	4
ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे	5
अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल दो	9
अदालत से बचो	10
नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे	12
इंजील, यूहन्ना 12:12-36	13

ईसा मसीह बैत-अनियाह में ठहरा हुआ था। यह गाँव यरूशलम शहर के नज़दीक था। वहाँ उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था। वहाँ लाज़र की बहन मरियम ने ईसा मसीह पर तेल उंडेलकर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया था।

फ़सह की बड़ी ईद क़रीब थी, इसलिए अनगिनत लोग दूर-दराज़ मुल्कों से यरूशलम आ चुके थे। यरूशलम में ईसा मसीह के दुश्मन भी ताक में बैठे थे। वहाँ उस पर क़ब्ज़ा करने के बहुत मौक़े थे।

ईसा मसीह उनकी साज़िशें ख़ूब जानता था। तो भी वह अगले दिन यरूशलम के लिए रवाना हुआ। एक बड़ी भीड़ साथ चल पड़ी। शहर से भी एक बड़ा हुजूम उससे मिलने निकल आया। बहुतों के हाथ में खजूर की डाली थी।

► **खजूर की डाली क्यों?**

खजूर की डाली ख़ुशी और फ़तह का निशान थी। खजूर की डालियों से वह अपनी तवक़्क़ो ज़ाहिर कर रहे थे कि ईसा मसीह यरूशलम में दाख़िल होकर बादशाह बनेगा। इसलिए वह चिल्लाकर नारे भी लगाने लगे,

> होशाना!
> मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
> इसराईल का बादशाह मुबारक है! (यूहन्ना 12:13)

► **होशाना का क्या मतलब है?**

होशाना इबरानी है। इसका मतलब 'मेहरबानी करके हमें बचा!' है।

► **यह आम नारा नहीं है। यह नारा पाक कलाम का एक हवाला है। कौन-सा हवाला?**

यह नारा एक ज़बूर का हवाला है जो फ़सह की ईद पर गाया जाता था (ज़बूर 118:25-26)। यह गाकर लोग आनेवाले अल-मसीह को याद करते थे। 'इसराईल का बादशाह मुबारक है' उनकी तरफ़ से इज़ाफ़ा था।

► **वह यह क्यों चिल्ला रहे थे?**

इससे वह साफ़ एलान कर रहे थे कि ईसा आनेवाला अल-मसीह है, वह बादशाह जो दुश्मन को मुल्क से हटा देगा।

अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने जवाब में क्या किया, क्योंकि इससे हम एक अहम सबक़ सीखते हैं। यह कि

मसीह की हलीमी अपनाओ

ईसा मसीह एक जवान गधे पर बैठ गया।

► **वह गधे पर क्यों बैठ गया?**

यूहन्ना इसका जवाब देता है :

> जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
> ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
> देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है। (यूहन्ना 12:15)

► **यह कलामे-मुक़द्दस का कौन-सा हवाला है?**

ज़करियाह नबी ने यह फ़रमाया था।

► **इससे यूहन्ना क्या कहना चाहता है?**

हम इसका मतलब बेहतर तौर से समझेंगे अगर हम ज़करियाह का पूरा हवाला पढ़ें। वहाँ लिखा है,

> ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है। [...] मौऊदा बादशाह के कहने पर तमाम अक़वाम में सलामती क़ायम हो जाएगी। उसकी हुकूमत एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक मानी जाएगी। (ज़करियाह 9:9-10)

► **इससे आनेवाले बादशाह अल-मसीह के बारे में क्या क्या बातें निकलती हैं?**

- वह हलीम होगा। इसलिए वह गधे के बच्चे पर सवार होगा।
- वह तमाम अक़वाम में सलामती क़ायम करेगा।
- उसकी हुकूमत पूरी दुनिया पर होगी।

► **इस सोच में और यरूशलम के लोगों की सोच में क्या फ़रक़ थी?**
लोग एक जंगजू बादशाह चाहते थे जो दुश्मन से इंतक़ाम लेगा। इसके मुक़ाबले में ईसा मसीह गधे पर बैठकर एक और रास्ता दिखा रहा था—हलीमी का रास्ता, सलामती का रास्ता। बेशक उसकी हुकूमत बैनुल-अक़्वामी होगी, लेकिन यह अमनो-अमान की हुकूमत होगी। दूसरी क़ौमें भी इसमें शामिल होंगी।

उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन ईसा मसीह के जी उठने के बाद उन्हें समझ आई।

► **शागिर्दों को क्या बात समझ आई? क्या हुजूम ने पहले से नहीं पुकारा था कि ईसा मसीह इसराईल का बादशाह है?**
ज़रूर। लेकिन उस वक़्त किसी को यह बात समझ न आई कि ईसा मसीह की राह हलीमी की राह है, वह राह जो सलीब तक पहुँचाएगी।

दूसरा सबक़ जो हम सीखते हैं,

मसीह से मिलो

कुछ यूनानी यरूशलम में थे। वह भी ईद मनाने के लिए आए थे।

► **यह यूनानी क्यों ईद मनाने आए थे? यह तो ग़ैरयहूदी थे जो यूनानी बोलते थे।**

यह लोग यहूदी मज़हब और शरीअत बहुत पसंद करते थे इसलिए उनकी ईदें मनाते थे।

अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए। उन्होंने कहा, "जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।"

► **यह ग़ैरयहूदी क्यों ईसा मसीह से मिलना चाहते थे?**

इंजील की ख़ुशख़बरी ग़ैरयहूदियों में भी फैलने लगी थी। उन्हें पता चल गया था कि यह आम राहनुमा नहीं है। इसलिए वह जानना चाहते थे कि क्या यह अल-मसीह है।

इन लोगों ने एक काम ठीक किया : वह ईसा मसीह से मिलने आए। जो इस दुनिया की तारीकी से नजात पाना चाहता है लाज़िम है कि वह ईसा मसीह से मिलने आए। यह पहला क़दम है।

► **क्या आप ईसा मसीह से मिलने आए हैं?**

यहूदियों की तरह यह लोग भी अंदाज़ा लगा रहे थे कि ईसा मसीह बड़ा बादशाह बनेगा। इसलिए बेहतर यह है कि हम पहले से उसके साथी बनें। अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया, क्योंकि यह बहुत अहम है। इससे हम तीसरा सबक़ सीख लेते हैं। यह कि

ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे

उसने फ़रमाया,

> अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है। (यूहन्ना 12:23-24)

► **दाने की इस मिसाल का क्या मतलब है?**

गंदुम का दाना अगर ज़मीन में डाला न जाए तो अकेला ही रहता है। जब ज़मीन में डाला जाता है तो वह मर जाता है, तब ही कसरत का फल लाता है।

► **ईसा मसीह दाने की मिसाल से यूनानियों को क्या बताना चाहता था?**

तुम लोग देखना चाहते हो कि मैं इसराईल का जंगजू बादशाह बन जाऊँ। लेकिन मेरी राह फ़रक़ है। मैं ज़रूर जलाल पाऊँगा, मगर इस दुनिया में बड़ा बनने से नहीं। मेरी राह सलीब की राह है—वह राह जिससे मैं सचमुच कसरत का फल लाऊँगा। वह राह जिससे तुम सचमुच आज़ाद हो जाओगे, सचमुच अबदी ज़िंदगी पाओगे। जिससे सचमुच सलामती हासिल होगी। शर्त यह है कि तुम मुझ पर ईमान लाओ, मुझ पर जिसने हलीमी की यह राह अपनाई है। लेकिन हलीमी की यह राह न सिर्फ़ ईसा मसीह की है। यह उसके शागिर्दों की भी है। इसलिए उसने फ़रमाया,

> जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उसकी इज़्ज़त करेगा।
> (यूहन्ना 12:25-26)

► **अपनी जान से दुश्मनी रखने का क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह है कि हम योगी बन जाएँ? कि हम अपने जिस्म को दबाते रहें, अपने अना को ख़त्म करने की कोशिश करें?**

नहीं, ईसा मसीह यहाँ अपने पीछे हो लेने की बात कर रहा था : जो अपनी जान को अव्वलियत देता है उसका आक़ा ईसा मसीह नहीं हो सकता। ऐसा शख़्स अपनी जान को खो देगा, यानी वह नजात नहीं पाएगा। इसके मुक़ाबले में अपनी जान से दुश्मनी रखने का मतलब यह है कि मैं ईसा मसीह को अव्वलियत दूँ। जो ऐसा करता है वह अपनी जान को अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। ईसा मसीह के पीछे हो लेने का मतलब यही है : कि मैं उसकी ख़ातिर अपनी जान देने तक तैयार हूँ।

► **इसका क्या मतलब है कि 'जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा'?**

ईसा मसीह की राह हलीमी की राह है, ऐसी हलीमी जो सलीब तक पहुँचती है। जो उसका शागिर्द है उसकी भी यही राह है।

► **हलीमी की यह राह कैसी है?**

बड़ी बात यह है कि हम मसीह को प्यार करें, उसे अव्वलियत दें। तब हमारी जान महफ़ूज़ रहेगी, चाहे हम उसकी ख़िदमत में मर भी जाएँ। लेकिन अगर इस दुनिया की इज़्ज़त और दौलत हमारी ज़िंदगी में अव्वलियत रखे तो अपनी जान को अबद तक महफ़ूज़ रखने का चांस ही नहीं रहता। यों शागिर्द की राह ईसा मसीह की राह है।

सफ़दर अली एक ऐसा आदमी था जिसने ईसा मसीह को अव्वलियत दी। वह ऊँचे दर्जे का मौलवी था। ईसा मसीह के पीछे हो लेने से उसे सख़्त दिक़्क़त हुई। वह फ़रमाता है, मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे दूध से मक्खी की मानिंद दूर फेंक दिया। उन्होंने सब मुहब्बत और क़राबत के वास्ते तोड़ डाले। किसी ने हमारे अहलो-अयाल को बहकाया और भगाया। किसी ने नोट, किसी ने किताबें, किसी ने बहुत-से क़ीमती काग़ज़ों को चुराया। बाज़ों ने अच्छी तरह से भारी चलते-चलाते प्रेस को तुड़वाया। कोई रुपए और किताबें लेकर भाग गया। किसी ने प्रेस की कई हज़ार किताबों पर हमला करके कौड़ियों के मोल बिकवाया। किसी ने मालो-असबाब दबाया। किसी ने मकान ही दबवाया। और इसी तरह जिसके जो जी में आया कर गुज़रा। अब तक वह मेरा पीछा नहीं छोड़ते।

सफ़दर अली को पता चला कि ज़मीन में बीज बोने का क्या मतलब है। सलीब की राह के बारे में हम एक और सबक़ सीखते हैं। यह कि

अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल दो

► **क्या सलीब की यह राह ईसा मसीह के लिए आसान थी?**

नहीं, वह हद से ज़्यादा परेशान था। उसने फ़रमाया,

> अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे। (यूहन्ना 12:27-28)

► **क्या उसने यह दुआ की कि मुझे मौत से बचा?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

वह तो इसलिए आया था।

► **क्यों आया था?**

ताकि अपनी मौत से हमारी सज़ा उठाए, हमें गुनाह और मौत के क़ब्ज़े से छुड़ाए।

► **बचने के बजाए ईसा मसीह ने क्या दुआ की?**

ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।

► **सो हमारी सबसे बड़ी दुआ क्या होनी चाहिए?**

यह कि ख़ुदा हमारी ज़िंदगी से अपने नाम को जलाल दे।

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।

जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने ख़याल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।”

► **क्या उन्हें समझ आई कि आवाज़ क्या कह रही है?**

नहीं। लेकिन वह समझ गए कि यह ख़ुदा की तरफ़ से जवाब है। ईसा मसीह ने फ़रमाया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी।” मतलब है ताकि तुम समझो कि यह बात अल्लाह तआला की तरफ़ से है।

लेकिन जो ईसा मसीह की यह राह नहीं अपनाता उसके साथ क्या होगा? उसे ईसा ने आगाह किया कि

अदालत से बचो

उसने फ़रमाया,

> अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा। (यूहन्ना 12:31-33)

► **सलीब की राह किस क़िस्म की राह है?**

अदालत की राह।

► **किसकी अदालत की जाएगी?**

दुनिया की और दुनिया के हुक्मरान की।

► **दुनिया का हुक्मरान कौन है?**

इबलीस।

► **उसकी अदालत किस तरह की जाएगी?**

अपनी सलीबी मौत से ईसा मसीह उस पर फ़तह पाएगा।

► **क्या इसका मतलब है कि सलीबी मौत से इबलीस दुनिया का हुक्मरान नहीं रहा?**

नहीं। इसका मतलब है कि अब से उसकी तबाही यक़ीनी है, अब उसका थोड़ा वक़्त बाक़ी रह गया है (देखिए मुकाशफ़ा 12:12)।

► **दुनिया की अदालत किस तरह की जाएगी?**

जो ईसा मसीह की सलीबी मौत क़बूल करके उस पर ईमान लाएँगे वह अदालत से बच जाएँगे। जो इनकार करेंगे उनकी अदालत की जाएगी। उन्होंने ईसा मसीह की नजात क़बूल नहीं की, इसलिए वह अपने गुनाहों में तबाह हो जाएँगे।

► **मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा : इसका क्या मतलब है?**

ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के दो मानी हैं। एक, मसीह को सलीब पर चढ़ाया जाएगा। दूसरे, इस रास्ते से उसे आसमान पर उठा लिया जाएगा। वहाँ पहुँचकर वह उनको अपने पास खींच लाएगा जो उस पर ईमान लाए हैं। एक आख़िरी सबक़,

नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे

► **यह बात सुनकर लोगों ने क्या जवाब दिया?**

वह बोल उठे, “कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है कौन?”

ईसा मसीह की बातें सुनकर लोग समझ गए कि मसीह वह कुछ नहीं करेगा जो हम चाहते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि आख़िर तुम कौन हो? तब ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ। (यूहन्ना 12:35-36)

► **जब लोगों ने पूछा कि आख़िर तुम कौन हो तो ईसा मसीह ने यह जवाब क्यों दिया?**

कुछ बातें ऐसी हैं जो हम सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह के पीछे हो लेने से समझ सकते हैं। इसलिए वह फ़रमाता है कि नूर में चलते रहो। जो तारीकी में चलता है वह नहीं समझ सकता कि ईसा मसीह कौन है।

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ायब हो गया। वह क्यों ग़ायब हुआ? लोग उसकी बातों से मायूस हो रहे थे, क्योंकि सलीब की यह राह उन्हें नहीं भाती थी। साथ साथ अब ईसा मसीह की अलानिया ख़िदमत ख़त्म हुई। अब से उसकी तालीम शागिर्दों पर महदूद रही।

ईसा मसीह की यह बातें इत्तफ़ाक़ से नहीं हुईं। अपनी अलानिया ख़िदमत के इख़्तिताम पर वह अपनी सलीबी राह पर ज़ोर देना चाहता था हालाँकि वह जानता था कि उस वक़्त यह उन्हें बेतुकी-सी लग रही थी। लेकिन यह बातें आज भी मसीह की पैरवी की बुनियाद रही हैं। इसलिए आओ,

- **मसीह की हलीमी अपनाओ।**
- **मसीह से मिलो।**
- **ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे।**
- **ख़ुदा को जलाल दो।**
- **अदालत से बचो।**
- **नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे।**

इंजील, यूहन्ना 12:12-36

अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम खजूर की डालियाँ

पकड़े शहर से निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

> होशाना!
> मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
> इसराईल का बादशाह मुबारक है!

ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

> ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
> देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।

उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलामे-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र भी है।
जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था। इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में सुना था। यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।”

कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद के मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।”

फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई। लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है। जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उसकी इज़्ज़त करेगा।

अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।”

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।”

हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने ख़याल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।”

ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।” इन अलफ़ाज़ से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।

हुजूम बोल उठा, “कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है कौन?”

ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ।”